International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(II), October - December, 2025, pp. 175-179

सीकर जिले के संदर्भ में पर्यटक स्थलों एवं पर्यटन संभावनाओं का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. धीरज कुमार[1] | मुकेश कुमार[2*]

[1]सह आचार्य, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पिलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]शोधार्थी, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पिलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: mukeshgeo6878@gmail.com

Citation: कुमार, धीरज, & कुमार मुकेश. (2025). सीकर जिले के संदर्भ में पर्यटक स्थलों एवं पर्यटन संभावनाओं का भौगोलिक अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(II)), 175–179.

सार

पर्यटन का अर्थ आज सिर्फ नयी–नयी जगहों की सैर करना नहीं बल्कि दुनिया जहान से अपने आपको जोड़ लेना है। उन्नत या साहसिक पर्यटन एक ऐसा आयाम है जो पर्यटन सुख के अलावा शरीर के साथ ही मस्तिष्क की समग्र गतिविधि निस्तारण में सहयोगी भूमिका अदा कर रहा है। भारत में भी यह मान्यता अब तेजी से फैलती जा रही है कि जहां कुदरत मेहरबान न हो तो अपने ही जीवन और उद्यम से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। इस बात को समझने के लिए एक अकेला ही दृष्टांत काफी होगा। प्राकृतिक संपदा के दृष्टिकोण से उत्तर भारत में हरियाणा, देश के ही कुछ अन्य प्रांतों से बहुत पिछड़ा हुआ था। पड़ोसी राज्य राजस्थान से उसे रेगिस्तान और रेतीले मैदानों का सन्नाटा तो जरूर मिला पर ऐतिहासिक, पुरातात्विक विरासत नहीं। बावजूद उसके कुशल नेतृत्व, स्थानीय जनता के जीवट और उसकी लगन ने चद वर्षो में ही राजस्थान का समग्र कायाकल्प कर डाला। आज स्थिति यह है कि राजस्थान पर्यटन के दृष्टिकोण से देश में अबल है।

'' अथिति देवो भवः ''

शब्दकोशः *पर्यटन, भौगोलिक अध्ययन, प्राकृतिक संपदा, रेतीले मैदान।*

प्रस्तावना

भारत में देशाटन की परम्परा अति प्राचीन है। वैदिक ऋषि यद्यपि एकान्त चिंतन, एकान्तवास तथा जीवन को प्रमुखता देते थे तथापि देश भ्रमण की प्रथा उनमें व्याप्त थी। रामायण–महाभारत कालीन ऋषि देशाटन करते थे। नारद, अगस्त्य, विश्वामित्र, दुर्वासा, कण्व आदि के तीर्थाटन एवं देशाटन की चर्चा अनेक पुस्तकों में आई है। महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, शंकराचार्य, कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, तुलसी, सूर आदि के तीर्थाटन–देशाटन की कथाएं सर्वविदित हैं। साधनों के अभाव में सामान्य गृहस्थ ने इस दिशा में कभी रूचि नहीं ली। आज भी जब सारे साधन उपलब्ध हैं भारत के करोड़ों नागरिक अर्थाभाववश देश भ्रमण का विचार भी नहीं करते। अशिक्षा, निर्धनता, रूढ़िवादिता ने देशवासियों को सदैव देशाटन से विमुख बनाए रखा। स्वतंत्र भारत में इस प्रवृति को प्रोत्साहन देने के लिए पर्यटन मंत्रालय को अस्तित्व में लाया गया। इतना ही नहीं सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दे दिया है। साधु–संत जो सामान्य मानव से ऊपर होते हैं, उसका मुख्य कारण उनकी घुमक्कड़ी ही है।

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

पर्यटन के इसी विशिष्ट गुण को देखते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है–

''मुद मंगल मय संत समाजू।
जिमि जग जंगप तीरथ राजू।।''

मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन की दृष्टि से देशाटन या पर्यटन हमारी एक मनोवैज्ञानिक मांग भी है। राजनैतिक नेताओं की विदेश यात्राओं से सौहार्द्र एवं बन्धुत्व के भाव दृढ़ होते हैं जिससे युद्धों का खतरा कम होता है। अतः देशाटन से जीवन में अनेक प्रकार के लाभ होते हैं। किसी ने ठीक कहा है –

"मन का रंजन और साथ में देह समर्थन,
अनायास ही प्राप्त करो करके देशाटन।''

भौगोलिक विचारधाराओं मे पर्यटन

प्राचीन एवं मध्य काल में कई प्रसिद्ध भूगोलवेत्ताओं ने अनेक स्थानों की यात्राएँ की। कुछ प्रसिद्ध भूगोलवेत्ताओं द्वारा दिए पर्यटन सम्बन्धी विचार निम्नलिखित हैं। यूनानी विचारधारा प्राचीन यूनानी विद्वानों ने भूगोल का बहुत विकास किया। यह वह काल था जब संसार केवल एशिया, यूरोप और अफ्रीका तक ही सीमित माना जाता था। अनेग्जीमेण्डर, ने अनेक स्थानों की यात्राएँ कीं। उसे संसार का सर्वप्रथम मानचित्र निर्माता बताया गया है। इरैटोस्थनिज ने पृथ्वी की परिधि नापने के लिए मिस्र के आस्वान क्षेत्र में साइने नामक स्थान को अपना प्रयोगस्थल बनाया, जो आज भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

इसी प्रकार पोसिडोनियस ने भी अपने शास्त्रों में भौतिक भूगोल पर बल दिया, दूसरी तरफ उसने गेलेशिया के लोगों का भी वर्णन किया। क्लाडियस टॉलमी ने अनेक ग्रंथों एवं मानचित्रों की रचना की। एक बड़ी रोचक घटना टॉलमी के बनाए मानचित्रों से जुड़ी है, पोसिडोनियस के माप को लेकर टॉलमी ने अपने मानचित्र बनाऐ थे, लेकिन उसमें यह दोष रहा कि उसमें पृथ्वी का आकार छोटा था। टॉलमी के मानचित्रों के इस दोष का प्रभाव कोलम्बस की यात्राओं पर पड़ा, क्योंकि उसने इन मानचित्रों का अनुसरण करते हुए अमेरिका को एशिया समझा।

रोमन विचारधारा के स्ट्रैबो, पोम्पोनियस मेला और प्लिनी ने अनेक क्षेत्रों की यात्राएं कीं। स्ट्रैबो ने लिखा कि ''भूगोल के द्वारा समस्त संसार के निवासियों से परिचय होता है। भूगोलवेत्ता एक ऐसा दार्शनिक होता है, जो मानवीय जीवन को सुखी बनाने और खोजो में संलग्न रहता है।'' पोम्पोनियस मेला के ग्रन्थ कॉस्मोग्राफी में विश्व का संक्षिप्त वर्णन मिलता है। अरब विचारधारा के प्रमुख अरब विद्वान अल–इदरीसी ने केवल पर्यटन के उद्देश्य से ही एक ग्रंथ लिखा– उसके लिए जो मनोरंजन के लिए विश्व भ्रमण की इच्छा रखता है। इसके साथ उसने एक मानचित्रावली भी प्रकाशित की। अल–बरुनी, अल–मसूदी, इब्न–बतूता आदि अरब भूगोलवेत्ताओं ने भी अनेक यात्राएँ कर क्षेत्रीय भूगोल के अन्तर्गत पर्यटन को बढावा दिया।

भारतीय विचारधारा में भारतीय परंपरा में परिव्राजक का स्थान प्राचीन काल से ही है। संन्यासी को किसी स्थान विशेष से मोह न हो, इसलिए परिव्राजक के रूप में पर्यटन करते रहना होता है। ज्ञान के विस्तार के लिए अनेक यात्राएँ की जाती थीं। आदि शंकर और स्वामी विवेकानन्द की प्रसिद्ध भारत यात्राएँ इसी उद्देश्य से हुईं। बौद्ध धर्म के आगमन पर गौतम बुद्ध के सन्देश को अन्य देशों में पहुँचाने के लिए अनेक भिक्षुओं ने लम्बी यात्राएँ कीं। अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को इसी उद्देश्य से श्रीलंका भेजा। सामान्यजन के लिए ज्ञान के विस्तार और सामूहिक विकास के लिए तीर्थ यात्राओं की व्यवस्था भी प्राचीन भूपर्यटन का ही एक रूप था। महापंडित राहुल सांकृत्यायन कहते हैं कि ''मनुष्य एक जंगम प्राणी है।'' अपने आविर्भाव के आदिचरण से ही मानव की प्रकृति घुमक्कड़ी की रही है। इसके पीछे अनेक कारण रहे हैं। आज 'पर्यटन' शब्द का एक विशेष अर्थ में प्रयोग हो रहा है। पर्यटन अब केवल मनोरंजन का ही साधन नहीं है अपितु संसार के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था ही पर्यटन पर आधारित हो गई है।

सीकर जिलें के प्रमुख पर्यटन स्थल

- **खाटूश्याम मंदिर :–** यह जिले के दांतारामगढ़ तहसील के खाटू ग्राम में जयपुर से 80 किमी, रींगस से 17 किमी., सीकर से 47 किमी की दूरी पर अवस्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष फाल्गुन माह की एकादशी को विशाल मेला लगता है, जहाँ देश भर से लाखों श्रद्धालु दर्शन हेतु आते है। मंदिर सफेद संगमरमर से बना है, प्रार्थना कक्ष में संगमरमर की सूक्ष्म कलाकारी दर्शनीय है। मंदिर के पास ही श्याम कुण्ड, श्याम बगीची, गौरीशंकर मंदिर भी दर्शनीय है।
- **जीणमाता व हर्षनाथ मंदिर :–** जीणमाता व हर्षनाथ मन्दिर जिले के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों में से एक है। ये जयपुर सीकर राष्ट्रीय राजमार्ग पर हर्षनाथ पर्वत श्रेणी में अवस्थित हैं। जीणमाता चौहान राजवंश की कुलदेवी, साथ ही मीणा जनजाति की अराध्य देवी है, जहाँ प्रतिवर्ष विशाल मेले का आयोजन होता है। हर्षनाथ की पूजा जीणमाता के भाई के रूप में की जाती है, अतः इनका भी विशेष महत्व है। ये मंदिर 10वीं शताब्दी में निर्मित है। वर्षाकाल में यहाँ हरियाली फेल जाती है जो मनोरम दृश्य का निर्माण करती है।
- **गणेश्वर ताम्रयुगीन सभ्यता :–** सीकर के नीम का थाना तहसील में स्थित गणेश्वर राजस्थान के प्राचीन पुरातात्विक स्थलों में एक है। यहाँ ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष विद्यमान है; इन अवशेषों के अलावा यहाँ सल्फर युक्त गर्मपानी का कुण्ड पर्यटकों के आकर्षण का विषय है।
- **लक्ष्मणगढ़ :–** सीकर से 24 किमी की दूरी पर राष्ट्रीयराजमार्ग 11 पर अवस्थित लक्ष्मणगढ कस्बा, लक्ष्मणगढ किला एवं हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। किले का निर्माण 1864 में लक्ष्मणसिंह द्वारा करवाया गया जो भेड़ नामक पहाडी पर अवस्थित हैं एवं हवेलियों में चार चौक हवेली, राठी परिवार हवेली, कयाल हवेली, संगनीरिया हवेली एवं डाकनियों का मंदिर विशेष रूप से दर्शनीय है। यहाँ की हवेलियों के भित्ति चित्र विश्वभर में प्रसिद्ध है।
- **फतेहपुर :–** जयपुर–बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर अवस्थित फतेहपुर हवेलियों, जोजोबा फार्म, किले के लिए प्रसिद्ध है। हवेलियों में जगनाथ सिंघानिया हवेली, गोयनका हवेली, पोद्दार हवेली, केडिया हवेली, दिगम्बर जैन मंदिर, द्वारिकाधीश मंदिर, लक्ष्मीनाथ मंदिर, सरस्वती पुस्तकालय, दोजांटी बालाजी मंदिर हेतु प्रसिद्ध है। हवेलियों में आला–गिला पद्धति से निर्मित चित्र पर्यटकों को विशेष लुभाते है।
- **रामगढ शेखावाटी :–** रामगढ़ राष्ट्रीय राजमार्ग 65 पर सीकर से 74 किमी दूरी पर अवस्थित हैं। यह शहर हवेली भितिचित्र, छतरी, रचनात्मक कब्र एवं स्थानीय हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। हवेलियों में रामगोपाल पोद्दार हवेली, सुरोलिया हवेली, ताराचंद घनश्यामदास हवेली, प्रसिद्ध है। इनके अलावा रामगोपाल पोद्दार छतरी, गंगा मंदिर, शनिदेव मंदिर आदि दर्शनीय स्थल है। यहां भी हवेलियों के भितिचित्र पर्यटकों को विशेषरूप से लुभाते है।
- **शाकम्भरी माता मंदिर :–** यह मंदिर सीकर जिले के सकराय ग्राम में उदयपुर वाटी से 15 किमी की दूरी पर अवस्थित हैं। इस मंदिर का प्राथमिक निर्माण दुर्लभराय चौहान के भतीजे ने करवाया था। वर्तमान स्वरूप सेठ राम गोपाल द्वारा प्रदान किया गया। यह मंदिर लोहार्गल पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। वर्षाऋतु में यहाँ का दृश्य अत्यन्त मनोरम होता है। पास में ही कोट बांध, लोहार्गल तीर्थस्थल, चौबिस कोशीय परिक्रमा स्थल विशेष रूप से दर्शनीय है।

उपर्युक्त के अलावा खण्डेला में खंण्डेला धाम जहाँ 37 कुल देवी एवं काल भैरव, गणेश जी मंदिर, चारोडाधाम, दो जांटी बालाजी(फतेहपुर), शिव मन्दिर बालेश्वर (नीम का थाना) ऐसे स्थल हैं, जहाँ पर्यटन विकास की संभावनाऐं विद्यमान है।

पर्यटन से संबंधित साहित्य

- **राय (1983)**, ''सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय दशाओं पर राजस्थान नहर परियोजना का प्रभाव'' का अध्ययन किया है। राजस्थान नहर परियोजना के क्षेत्र में सामाजिक बदलाव के साथ

ही आर्थिक एवं पर्यावरणीय दशाओं में भी बदलाव आया है। यह बदलाव सकारात्मक के साथ–साथ नकरात्मक भी है।

- **रहमान (1993)** ने सतत् विकास, पर्यावरण तथा जनसंख्या का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए संतुलित परिस्थितिकी हेतु सुझाव प्रस्तुत किये।
- **घोष (2001) –** अपनी पुस्तक में ''यात्रा पर्यटन और यात्रा प्रबंधन'' शीर्षक से लिखा है कि कृषि, उद्योग और पर्यटन का विकास किसी दिए गए क्षेत्र में धन और व्यापार लाने के लिए तीन प्रमुख क्षेत्र हैं। पर्यटन विकास केवल शांतिपूर्ण वातावरण में होगा। दंगे, डकैती, लूटपाट और आतंकवाद से आने वाले पर्यटकों को ठिकाने लगाया जाएगा।
- **सकलरी मारिया (2011) – ''**अन्तर्राश्ट्रिय पर्यटन, घरेलू पर्यटन एवं पर्यावरणीय परिवर्तन'' पर लेख में बताया है कि पर्यावरणीय वाद विवाद में पर्यटन उद्योग को पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव के रूप में भी पहचाना जाता है।
- **डॉ. पटेल रूपल (2012)** – ''भारतीय पर्यटन उद्योग–उत्कर्श एवं आने वाले मुद्दे'' नामक लेख में लिखा गया है कि एक देश के आर्थिक विकास में पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। पर्यटन भारत में विदेशी आय मुद्रा प्राप्त करने का दूसरा सबसे बड़ा माध्यम है।
- **नाय (2012) एवं अन्य** – ''सस्टेनेबल टूरिज्म डवलपमेन्ट थ्रो इन्टिग्रेटेड प्लानिंग इन उत्तराखण्ड'' नामक लेख लिखा है। यह लेख उत्तराखण्ड में पर्यटन की बढ़ती हुई गतिविधियों पर प्रकाश डालता है।

शोध के उद्देश्य

- पर्यटन की वर्तमान स्थिति का भौगोलिक आँकलन करना।
- पर्यटन विकास के लिए आवश्यक आधारभूत कारकों का विश्लेशण एवं मूल्यांकन करना।
- शोध क्षेत्र के विकास व उत्थान में पर्यटन की भूमिका का अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृश्ठभूमि का अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र की स्थापत्य कला, धार्मिक स्थलों एवं अन्य प्राचीन पर्यटन स्थलों को सचित्र प्रस्तुत करना।
- शोध क्षेत्र में पर्यटन के विकास में कार्यरत सरकारी व गैर–सरकारी संस्थाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- पर्यटन की परिवर्तनशीलता, गतिशीलता एवं रोजगार के अवसरों के संदर्भ में पर्यटन का मूल्यांकन करना।
- अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन की आधारभूत समस्याओं एवं ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने की सम्भावनाओं की तलाश करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- सीकर जिले के पर्यटन विकास में गतिशीलता एंव संभावनाओं के अन्तर्गत कई चुनौतियाँ है।
- सीकर जिले के पर्यटन विकास में गतिशीलता के अन्तर्गत किसी भी प्रकार की चुनौतियाँ नहीं है।

पर्यटन की आवश्यकता एवं महत्व

शोध क्षेत्र सीकर जिला में पर्यटन उद्योग के विकास का अध्ययन आवश्यक व महत्वपूर्ण इस दृश्टि से है कि पर्यटन व्यवसाय से विदेशी आय प्राप्त करने, रोजगार के विभिन्न साधनों का सर्जन करने, विश्व के अनेक देशों के साथ आपसी सम्बन्धें को स्थापित करने, घनिश्ठ सांस्कृतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध बनाने विश्व बंधुत्व की भावना स्थापित करने, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण की की स्थापना करनी है। पर्यटक चाहे स्वदेशी हो या विदेशी हो, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के विकास द्वारा लोगो को रोजगार प्रदान

करने में सहायक होता है तथा साथ ही एक अच्छी संस्कृति को कायम रखने का अवसर प्रदान करता है। इसलिए भी प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गयी है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में वर्श 1980 के बाद पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं और वर्तमान समय में भी पर्यटन किसी भी देश या राज्य या संभाग के लिए विदेशी मुद्रा प्राप्त करने एवं सांस्कृतिक आदान प्रदान के प्रमुख साधन के रूप में विकसीत किया जा रहा है तथा सीमित महत्व वाले अध्ययन क्षेत्र में विदेशी मुद्रा अर्जित करने एवं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रोजगार के साधन उपलब्ध कराने वाला प्रमुख उद्योग बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। वर्तमान औद्योगिक समाज की महत्वपूर्ण विशेशता मानव के मानसिक तनाव में वृद्धि करना है। यह तनाव कार्य की जटिल प्रकृति, व्यस्त जीवन तथा परिवर्तनशील दशाओं से सामंजस्य के अभाव में उत्पन्न होता है। इस समय बढ़ती हुई नगरीयकरण की प्रवृति ने मनुश्य की व्यस्तता में अत्यधिक वृद्धि की है। अतः व्यस्त जीवन से कुछ समय के लिए स्वंय को अलग करने के लिए पर्यटन की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। वर्तमान अध्ययन में शोधर्त्ता के द्वारा पर्यटन विकास की गतिशीलता एवं चुनौतियों का भौगोलिक अध्ययन (सीकर जिले के विशेश संदर्भ में) शीर्शक में पर्यटन विकास को समग्र एवं समेकित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा। इसमें अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विरासत, स्थापत्य कला, साहित्य, संगीत इत्यादि पहलुओं के साथ पर्यटन विकास में अधिकाधिक संस्थाओं की भूमिका का विश्लेशण भी सम्मिलित किया जाएगा। सीकर जिला के सभी पर्यटक स्थलों, उनके महत्व और इतिहास के साथ–साथ अध्ययन क्षेत्र के पर्यटन की चुनोतियों, पर्यटन विकास एवं संभावनाओं का मूल्यांकन भी किया जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एर्स्किन, मेजर के. डी. (1909) : दी राजपूताना बजेटियर्स, वोल्यूम 3 ए.।
2. एच. भीष्मपाल (2012) – पर्यटकों का आकर्षण : राजस्थान'' आकृति प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली।
3. गोयल, सुनिल (1985) – ''पर्यटकों का स्वर्ग – राजस्थान'' गोयल ब्रदर्श, उदयपुर।
4. ट्यूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेन्ट – ट्यूरिज्म मैनेजमेन्ट, ब्लॉक ए कोटा ओपन यूनिवर्सिटी, कोटा, राजस्थान।
5. डेजर्ट ट्राइनग्ल (1998) – राजस्थान पर्यटन, जयपुर।
6. बंसल, सुरेश चन्द्र (2011) – ''पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन'' साहित्य सागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
7. बुरकर्ट, ए. जे. एण्ड मण्डलिक, एस. (1974) – ट्यूरिज्म पास्ट, प्रेजेन्ट एण्ड फ्यूचर, लन्दन।
8. मिश्रा, वी.सी. (1967) – ज्योग्राफी ऑफ राजस्थान, दी नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
9. राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड–सरकारी वेबसाइट, मूल से 11 सितंबर 2018 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 10 सितंबर 2018।
10. ''राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड'' – राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड, 2018।
11. राजस्थान टूरिज्म (2018) – राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड–सरकारी वेबसाइट, मूल से 12 सितंबर 2018 को पुरालेखित।

❑❑❑